भारत और यूरोपीय संघ "रणनीतिक भागीदार " हैं - लोक सभा अध्यक्ष

नई दिल्ली, 25 जून, 2015: लोक सभा अध्यक्ष श्रीमती सुमित्रा महाजन, जो एक भारतीय संसदीय शिष्टमंडल जिसमें लोक सभा और राज्य सभा दोनों के संसद सदस्य शामिल हैं, का नेतृत्व कर रही हैं, ने यूरोपीय संसद के भारत के साथ रिश्ते संबंधी शिष्टमंडल के साथ बैठक की।

इस अवसर पर, श्रीमती महाजन ने कहा कि भारत और यूरोपीय संघ महत्वपूर्ण "रणनीतिक भागीदार " हैं । पिछले वर्ष दोनों पक्षों ने इस रणनीतिक भागीदारी की दसवीं वर्षगांठ मनाई थी। साथ ही, उन्होंने 2013 में अपने कूटनीतिक संबंधों की स्वर्ण जयंती भी मनाई थी।

व्यापार संबंधों का उल्लेख करते हुए लोक सभा अध्यक्ष ने कहा कि यूरोपीय संघ लंबे समय से भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार रहा है । उन्हें यह जानकर प्रसन्नता हुई कि दोनों पक्षों के बीच वस्तुओं और सेवाओं का वार्षिक द्विपक्षीय व्यापार पिछले वर्ष 100 बिलियन यूरो तक पहुंच गया। भारत से सर्वाधिक निर्यात यूरोपीय संघ को ही किया जाता है और वहां से भारत सबसे ज्यादा आयात करता है । इसके अतिरिक्त, यूरोपीय संघ भारत में विदेशी संस्थागत निवेश और प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के साथ ही अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी के मामले में भी सबसे बड़े स्रोतों में से एक है। उन्होंने महसूस किया कि भारत के तीन संवेदनशील "डी" -डेमोक्रेसी (लोकतंत्र), डेमोग्राफी (जनसांख्यिकी) और डिमांड (मांग)-यूरोपीय संघ के निवेश और प्रौद्योगिकी हेतु बहुत महत्वपूर्ण अवसर उपलब्ध कराएंगे और त्वरित विकास हेतु भारत के प्रयास में भागीदार बनेंगे।

दो परंपरागत साझेदारों और विश्व के दो सबसे बड़े लोकतांत्रिक देशों के बीच संबंधों को और मजबूत तथा प्रगाढ़ बनाने की अनिवार्यता को देखते हुए, श्रीमती महाजन ने कहा कि भारत और यूरोपीय संघ की बहुपक्षीय मंचों में वैश्विक सरोकार के मुद्दों में भी गहरी रूचि है । उन्होंने आगे कहा कि भारत और यूरोपीय संघ जलवायु परिवर्तन में मुख्य भागीदार हैं और सतत विकास का लक्ष्य प्राप्त करने का सबसे अच्छा तरीका प्रकृति के पोषण के माध्यम से ही संभव है । श्रीमती महाजन ने इस बात का उल्लेख करते हुए कि भारत का परंपरागत और प्राचीन ज्ञान हमें प्रकृति से कम लेने और इसे अधिक देने की शिक्षा देता है, निम्नलिखित श्लोक का उद्धरण दिया:-

ॐ. सर्वे भवन्तु सुखिनः

सर्वे सन्तु निरामयाः ।

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु

मा कश्चिद् दुःख भाग भवेत् ।

ऊँ शांति: शांति: शांति: । (उद्धरित)

उसी दिन, श्रीमती महाजन ने यप्रेस में भारतीय सेना स्मारक पर श्रद्धांजलि भी अर्पित की । इस स्मारक का अनावरण मार्च, 2011 में एक समारोह में हुआ था । यह स्मारक, भारतीय सेना के उन 1,30,000 सैनिकों के प्रति समर्पित है जिन्होंने 1914-1918 के प्रथम विश्व युद्ध के दौरान फ्लैंडर्स क्षेत्र में सेवा की थी । भारतीय अभियान दल के लगभग 9000 सदस्य फ्रांस और फ्लैंडर्स में हताहत होने के कारण, युद्ध में अपनी चोटों की प्रकृति के कारण ही नहीं बल्कि अत्यधिक ठंड के कारण भी मारे गए ।